परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्त.

तुम्हारे हाथों में मैं हूँ 'चहकने की ललक'। इस बार दूसरी मर्तबा आई हूँ मैं खूब सारी बातों और वादों के साथ। तुममें से कई पहले से ही मेरे दोस्त हो और जो मुझे नहीं जानते उनको मैं कुछ बता दूं अपने बारे में। तुम्हे पता है, तुम बच्चे सब उस नन्ही सी फुदकती सी चिड़िया की तरह हो जो खुले आसमान में उड़ना चाहती है, अपनी अलग सी आवाज में चहकना चाहती है। इसी खुले से चहक को तुम्हारी लिखी कविता, कहानी में समेटकर लाई हूँ। जब तुम मुझे बोलते हुए पढोगे, सुनोगे और दूसरों को दिखाओगे सुनाओगे तो पता है तुम्हें मुझमें अच्छा लगेगा। इस बार जहाँ एक ओर मोर का पंख, बन्दर और पेड़ की डाल जैसी अच्छी सी कहानियां पढ़ने को मिलेगीं, दूसरी तरफ, मुन्ना का लेख, भैंस जैसी चटपटी कवितायें सुनाने को मिलेगीं। साथ ही अपनी बात, बूझो तो जाने और खुले से प्रश्न भी मिलेंगे। खूब पढ़ना और लिखना। तो पढ़ो और अपने दोस्तों, शिक्षकों को भी बताओ कि कैसी लगी तुम्हें मैं।

ठीक है ना!

तुम्हारी दोस्त,

चहकने की ललक

कविता

दिन रात

देखो सूरज एक अकेला
चमक रहा है सबेरा
चाँद एक बहुत हैं तारे
कितने सारे माला बनाये
घूम घूम कर आग बरसाए
झूम झूम कर रात लौटाए
देखो इतने सारे तारे
जगमग जगमग करते सारे।

सोनू कुमार, कक्षा– 5, खेम भटकन

कविता

छुक रुक छुक रुक

गाड़ी करती छुक छुक छुक
लम्बू कहता रुक रुक रुक
डिब्बा कहता घुस घुस घुस
लम्बू चढ़ गया खुश खुश खुश।

इंजन बोला कु ऊ कू
गाड़ी चल दी छुक छुक छुक

आगे थी एक भैंस खड़ी
गाड़ी से वो नहीं डरी।

गाड़ी चढ़ गयी चूँ चर्र,
भैंस गिर पड़ी धड़ाम डर्र
गाड़ी चल दी छुक छुक छुक
सब देखते टुक टुकटुक।

आगे आया बरबटपुर,
लोग आये भर भरपूर
टीटी आया सट सट सट
मांगे टिकट फट फट फट।

लम्बू था बिना टिकट
उतर के भागा टिक टिक
आगे जाकर पकड़ा गया
बिना टिकट के मजा खाया।

काजल कुमारी, कक्षा– 5, धर्मपुर

कविता

भैंस

भैंसका रंग है काला–काला
चेहरा इसका बड़ा दुलारा
पानी इसे बहुत सुहावे
कीचड़ मिटटी औरो भावे।
घास–भूसा इसका भोजन
पूछों मत यारों इसका वजन
रहना चाहे खुल्लम खुल्ला
भाता इसे न हल्ला–गुल्ला।
देती है यह मीठा दूध
मांगे कभी न दूध का सूद।

अनिकेत यादव, कक्षा–5, धर्मपुर

कहानी

हजाम और सींग

एक राजा था। उसका दो सींग था। एक हजाम उनका केश काटने आया तो देखा। कोई से कह देगा तो राजा साहेब तुम्हारा बाल–बच्चा का भकसी झोंकवा देंगे तो हजाम कोई से नहीं कह रहा था। उसके पेट में बेराम हो गया तो डॉक्टर के पास गया तो सब डॉक्टर हार गए। एक डॉक्टर कह रहा है कोई तुम बात छुपाये हो तो हजाम कहा कि हाँ। डॉक्टर कहता है कि कोई से जाकर कह देना तो ठीक हो जाएगा। हजाम जाकर एक आम के पेड़ से कह दिया। जिस आम के पेड़ से कहा, राजा के दुवार पर उसी का झाल–हरमुनिया गया। राजा के दुवार पर झाल–हरमुनिया बजा, झाल कहा राजा का दो सींग, सब पुछा, कौन कहा कौन कहा। हरमुनिया कहा, बुर्बक हजाम कहा।

मुकेश कुमार, कक्षा 5, खेम भटकन

कहानी

बिल्ली और चूहे

एकघने जंगल में चूहे और बिल्ली रहते थे। एक दिन दोनों ने खीर और तरबूज रोपा। दोनों ने खूब मेहनत की थी पर जब चूहे ने जाकर देखा तो उसका तरबूजा फट चूका था। उसने जाकर बिल्ली को बताया तो बिल्ली ने जाकर देखा कि उसका खीर नहीं फट रहा था। बिल्ली दुखी हो गयी। वह अपने घर को जाने लगी। तभी चूहे ने देखा। उसने पुछा, क्या हुआ। बिल्ली ने मन में दुखी होकर कहा कि उसका खीरा नहीं फटा था इसलिए वह दुखी मन से जा रही थी। तब चूहा कहा– तुम चिंता मत करो, मेरा तरबूजा फटा है, चलो हम तरबूजा खाएं। तभी चूहे ने जाकर तरबूजा तुड़ा और दोनों फिर खाने लगे और कहे हम रोज–रोज तरबूजा खायेंगे और खा के वे घर चले गए।

रूपेश कुमार, कक्षा– 7, संजलपुर

हमार बोली में

मोटका संपवा

हम गयी रहनी खेत में
गेहूं काटे। त देखनी के
खेत के बीच म एगो
गाछ रहे। ओही गछिया
में संपवा लपटाईल
रहल। त देखनी त
खूब मोटा रहै। त
ओकरा के देखनी त
डर गयनी। ओकरा के
इंटे इंटे मार के मुहादेहनी।

विकेश कुमार, कक्षा 5, खेम भटकन

कविता

चिड़िया

नीली पीली हरी थी चिड़िया
पेड़ों पर ये रहती है
तिनका–तिनका जोड़ जोड़ कर
घोंसला नया बनाती है
दो दो छोटे पंख हैं इसके,
आसमान में उडती है
जैसे–जैसे ऊपर जाती,
छोटी होती जाती है।

अभिषेक शर्मा, कक्षा 5, धर्मपुर

कहानी

बिलाई गयी बाजार

एक बिलाई बाजार गयी। वहां से कोहड़ा लायी। रास्ते में एक चूहा मिला। बिलाई मौसी, कोहड़ा कैसे चीरोगी? बिलाई बोली चर्र चर्र। फिर चूहे ने पुछा, कैसे छौंकोगी। बिलाई बोली, छन्न मन्न। चूहा पुछा, कैसे खाओगी? बिलाई बोली नामु नामु। फिर बिलाई मौसी जैसे ही खाकर सोई, चूहा चुपचाप फिर आ गया। जब बिलाई मौसी जम्भाई लेकर उठी तो देखी चूहा आया है। वह उसको दबारने लगी तो चूहा देखकर रुक गया और बोला, अरे बिलाई मुझे दौड़ा रही है, मैं रुक जाता हूँ। तब चूहा बिलाई से कहता है, मैं तो पूछने आया था कि सब कोहरा खा गयी क्या? बिलाई गुस्से में बोली, तुम इतनी रात को क्यूँ आये हो? अभी मुझे फिर से भूख लग गयी है। तभी एक दूसरी बिलाई आ गयी और बोली, मैं इस चूहे को खाऊँगी। दोनों बिल्ली में इस बात को लेकर झगडा हो गया तब चूहे ने कहा कि जो नीम का पेड़ पहले छूकर आएगा वो हमको अकेले खायेगा। लेकिन तब तक चूहा भाग कर अपने बिल में छुप गया।

साहस कुमार, कक्षा– 7, बलिया

कहानी

बन्दर और पेड़ की डाल

एक तालाब के किनारे एक बरगद का पेड़ था। उस पर बहुत सारे बन्दर रहते थे। एक रात आकाश में चाँद निकला हुआ था। उसकी छाया पानी में चमक रही थी। एक बन्दर ने कहा, चाँद पानी में गिर गया है, इसे निकालना चाहिये। उसकी बात सुनकर एक बुढा बन्दर ने उसे ऐसा करने से मना किया। परन्तु उन्होंने उसका कहना नहीं माना। पहले एक बन्दर डाल पकड़ कर लटक गया फिर दूसरा बन्दर पहले बन्दर की पूँछ पकड़ कर लटक गया। इसी तरह बन्दर एक के बाद पूँछ पकड़ते पकड़ते पानी के पास पहुँच गए। सबसे नींचे वाले बन्दर ने जैसे ही पानी में हाथ डाला तो पेड़ की डाली टूट गयी और सारे के सारे बन्दर ठण्डे पानी में गिर पड़े।

रिजवान अंसारी, कक्षा–7, बलिया

कविता
मुन्ना का लेख

खेल कूद कर मुन्ना आया
धुल से लिपटे उसके अंग
मम्मी बोली नल पर जाओ
पहले हाथ पाँव धो आओ
रगड़ रगड़ कर साफ करो
साबुन वहीं पड़ा है
पोंछ पोंछ कर सुखा करो
गमछा वहीं धरा है
मुन्ना बोला तब तक मम्मी
एक काम कर देना
झोला से ले पेंसिल कॉपी
बोरे पर रख देना
छोटा सा है एक सवाल
जो मुझे हल करना है
अच्छा सा एक निबंध
मम्मी पापा पर लिखना है।

पीयूष कुमार, कक्षा 4, धर्मपुर

कविता
बिल्ली और चूहा

बिल्ली मौसी बिल्ली मौसी
बोलो कहाँ से आई हो ?

कितने चूहे पकडे तुमने
कितने चूहे खायी हो?
क्या बतलाऊँ भैया तुमको
मिला मुझे बस एक ही चूहा
तनी सी मूंछों वाला था वो
निकला वो भी मरा हुआ।

शालू कुमारी, कक्षा- 4, धर्मपुर

कविता
तितली रानी

तितलीरानी चतुर सयानी
करती रहती है खूब मनमानी

रंग बिरंगे फूल देखकर
भर लाती मुंह में पानी
पीले लाल गुलाबी धानी
कुछ सुनहरे कुछ आसमानी
रंग सभी के भरे पंखों में
डाल डाल पर कहे कहानी
तितली रानी चतुर सयानी।

निशा कुमारी, कक्षा-5, धर्मपुर

कविता
रंगों की होली

होली का जब दिन आता है
बहुत मजा तब आता है
रंगों की होली खेलते हैं
एक दुसरे को रंग भिंगोते हैं
जब तक खेलें हम सब होली
घर में पकती पुआ पूरी
खा–पिके तब जाते अबीर लगाने
लेते आशीष बड़े–बूढ़ों से
उस दिन आता खूब मजा
होली का दिन ये लाता

सनी कुमार, कक्षा 7, संजलपुर

पुरुष्कृत कृतियाँ

कहानी
मोर का पंख

एक लड़की है। उसे मोर बहुत पसंद है। जब बादलों में घटा छा जाता, झिसी–झिसी सा बारिश होता है, मोर पंख फहराकर नाचने लगता हैद्य वह लड़की इसे देखकर बहुत खुश हो जाती है। एक दिन वह स्कूल जा रही थी उसे रास्ते में एक मोर का पंख मिला। उसे ले जाकर अपने कॉपी में रख दी। एक दिन उसकी सहेली उसकी कॉपी खोल कर देख रही थी तो उसे मोर का पंख मिला।

सूर्यमुखी कुमारी, कक्षा 8, रुइआ बंगरा

कविता
देखो बादल

देखो बादल नीला है
दिखने में रंग–रंगीला है
बारिश यही बरसाता है
यही तो हमें लुभाता है
बारिश में हम नहाते हैं
बीमार भी हम पड़ जाते हैं
देखो बादल बेढंगा है
लगता पर छैल–छबीला है
इधर उधर घूम घाम कर
कैसी शक्लें दिखाता है
लोट–पोट हम देखते हैं
खूब खुश हम हो जाते हैं।

मनीष कुमार , कक्षा–6, बलिया

कविता
अगर मैं भी

अगर मैं भी होता चिड़िया
अगर मेरे भी होते पंख
झट उड़ पहुँचता
एक जगह से दूजा
कभी पेड़ पर कभी आकाश
मन करता तो जा खाता
ढेरों फल–फूल
मन करता तो जा उड़ता
आकाश में बहुत दूर
अपनी चोंच से दाना
चुनचुन कर खा लेता
और बचे हुए को झड़ककर
चल जाता अपने घर को
काश अगर मैं चिड़िया होता
अगर भी होते मेरे पंख

बृजेश कुमार यादव, कक्षा- 7, रुइआ बंगरा

अपनी बात
तालाब किनारे

हम और मेरा दोस्त तालाब के पास पहुंचे तो बटही चिड़िया मछली को खा रही थी। तब हमलोगों को गुस्सा आया। मेरा दोस्त कहा कि ऐ मेरा दोस्त, चलो बटही चिड़िया को मारो और चलो मछली पकड़ने। मैंने कहा, तालाब का पानी बहुत ठंडा है। हमको तालाब के पानी से डर लगता है।

विवेक कुमार राम, कक्षा 4, धर्मपुर

सरसों में

खेत में एक दिन गए तो सरसों काट रहे थे तो नाग लौका और हमको लखेद दिया। हम तिरछा–तिरछा करके भागे। घर आये तो मम्मी बोली, अब तुम मत जाओ।

सनी कुमार, कक्षा 4, खेम भटकन

अपनी बात
साइकिल, मछली और

मैं एक दिन तालाब में साइकिल धोने गए थे तो एक बड़ी मछली देखे। हम जाने के बुडुवा है तो साइकिल छोड़ कर भाग पड़े। फिर कुछ देर के बाद गए तो साइकिल निकालकर लेकर भाग पड़े। फिर कुछ महीने बीत गए तो कुछ लोग तालाब में मछली मारते तो हम भी मारने लगे। कोई भी एक पत्थर फेंका तो हम जाने के मछली है तो हम जाल लेकर उहाँ पर चले गए तो कोई भी नहीं था। तालाब में से निकालकर घर ले गए।

अंकित कुमार, कक्षा 5, खेम भटकन

अपनी बात
चिड़िया घर

मैं एक दिन चिड़िया घर गयी। मैंने देखा कि वहां इतना अच्छा है कि मुझे आने का मन ही नहीं कर रहा था और वहां इतने सारे जानवर है जैसे हाथी, शेर, बाघ, तोता, भालू, मोर आदि। हमने देखा कि हाथी किसी बड़े पेड़ की डाली तोड़ कर पत्ते खाने लगी है और हम उसे देखने लगे। मौन मगरमच्छ को भी देखा कि पानी में वे सब नीचे बैठे थे और सारे मगरमच्छ पाने के बाहर, कोई पानी के ऊपर। मैंने अपनी माँ से कहा, माँ क्या तुम घर चलोगी। माँ कहती है, हाँ चलो। मैंने कहा कि मैं घर जाना नहीं चाहती हूँ क्यूँकि यहाँ इतना सुन्दर है कि जाने का मन ही नहीं कर रहा। यहाँ सब लोग कितने खुश हैं। तब मेरे पापा ने कहा, चलो घर चलते हैं और मुझे अपने पापा की बात माननी पड़ी क्यूंकि मैं अपने पापा की बात मानती हूँ और हम सब घर चले आये।

ज्योति कुमारी, कक्षा 8, रुइआ बंगरा

बूझो तो जानें

1. लम्बी पूँछ, पीठ पर रेखा, दोनों हाथों खाते देखा
2. छोटी सी चिड़िया, लम्बी सी पूँछ, क्या करेगी चिड़िया, जो काट लुंगी पूँछ
3. बचपन तो होता है हरा–भरा और बुढ़ापा है पीला, सारे फलों का राजा है, यह सचमुच है बड़ा रसीला

1. गिलहरी 2. पतंग 3. आम

खुले प्रश्न

आसमान है नीला क्यूँ, पानी गीला गीला क्यूँ
गोल क्यूँ है जमीन, सिल्क में है नरमी क्यूँ
आग में है गर्मी क्यूँ, दो और दो पांच क्यूँ नहीं
बहती क्यूँ है हर नदी, होती क्या है रोशनी
तारे क्यूँ हैं टूटते, बादलों में बिजली है क्यूँ
सोचा है.. ये तुमने क्या कभी
सोचा नहीं तो सोचो अभी।

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित।
सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स